ऋग्वैदिक कालीन आर्थिक जीवन

(1) ये लोग मिट्टी के घरों में रहते थे

(2) ये लोग लाल और काले मृदभांडों का प्रयोग करते थे लेकिन गेरुवर्णी मृदभांड इनके सबसे लोकप्रिय था।

(3) (i) हाल ही में हरियाणा के भगवानपुरा नामक स्थल की और पंजाब के तीन स्थलों की खुदाई हुई है और इन सभी जगह उत्तरकालीन हड़प्पा मृदभांडों के साथ-साथ चित्रित धूसर मृदभांड (P.G.W. Printed Gray ware) पाये गये हैं।

(ii) भगवानपुरा के प्राप्त वस्तुओं की तिथि 1600BC से 1000BC रखी गयी है और मोटे तौर पर ऋग्वेद का भी काल है। इन चारों स्थल का भौगोलिक क्षेत्र है जो ऋग्वैदिक काल आर्य का था।

(iii) यद्यपि चारों स्थलों के चित्रीय धूसर मृदभांड मिले हैं। फिर भी लोहे की वस्तु और अनाज का पता नहीं है। अतः हम ऋग्वैदिक अवस्था के समान काल के चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति के अन्तर्गत लोह पूर्व अवस्था की कल्पना कर सकते हैं

4. प्रारम्भिक वैदिक समाज पशुपालन पर आधारित था और पशुओं को पालना ही मुख्य पेशा था। एक चरवाही समाज कृषि उत्पादन की तुलना में पशुधन पर अधिक निर्भर रहता था। पशु चराने का काम आजीविका का साधन है। इसको के लोग अपनाते हैं जो ऐसे जो ऐसे क्षेत्र में रहते हैं जहाँ पर बड़े स्तर पर या खेती बारी का कार्य सम्भव नहीं हो सकता जिसके कारण पर्यावरण सम्बन्धी और अन्य सीमा तक सांस्कृतिक विशेषताएँ हैं

(5) प्रारम्भिक वैदिक काल के पशुपालन के महत्व का ऋग्वेद साक्ष्यों के काफी बड़े स्तर पर वर्णन हुआ है ऋग्वेद के बहुत सी मोमान अभिव्यक्तियाँ गाय (गौ) से जुड़ी हैं गाय सबसे महत्वपूर्ण पशु थी

(i) पालतू पशु सम्पन्नता का प्रतिकात

और समृद्ध आदमी जो पालतू पशु का स्वामी था वह गोमत कहलाता था

(ii) इस काल के सभी संघर्ष एवं लड़ाईयों के लिए जिन शब्दों का प्रयोग होता था वे थे गविष्टि, गुत्गवेषण, गोषु, गम्य, गव्य, गवयत्र, इत्यादि गविष्टि का अर्थ था गायों की खोज करना और ये शब्द स्पष्ट करते हैं कि इन पालतू पशुओं के अधिकार प्राप्त समूहों के मध्य असंतोष का आभास होता था तथा कभी-कभी इसको लेकर कबीलों के बीच संघर्ष एवं युद्ध छिड़ जाते थे।

(iii) ऋग्वेद में पणि शब्द का प्रयोग हुआ है जो वैदिक जनों के शत्रु थे तथा वे आर्यों के धन विशेषकर गायों को पर्वतों एवं जंगलों में छिपा देते थे। इन पशुओं को छुड़ाने के लिए वैदिक देवता इन्द्र की पूजा होती थी यह संदर्भ यह भी बताता है कि पशुओं का अपहरण सामान्य बात थी

(iv) राजा या मुखिया को गोपति / गोपक कहा जाता था जो गायों की रक्षा करता था

(v) ऋग्वेद में गोधूलि शब्द का प्रयोग समय को मापने के लिए किया गया है, दूरी को गवयूति नाम दिया गया है।

(vi) पुत्री को दुहती या दुहिता कहा गया है क्योंकि वह दूध दुहने का काम करती थी

(vii) जो लोग अपनी गाय के साथ एक ही गोठ में रहते थे उनको उसी गोत्र का माना जाने लगा

(viii) पशुओं के लिए युद्ध करना कबायलीय संगठनों के तर्क के काफी हद तक तर्क संगत लगता है, पशु ही सम्पत्ती का मुख्य अंश एवं मुख्य दक्षिणा की सम्पत्ति वस्तु हम भी जाती थी बार-बार मंत्रों में देवताओं की प्रार्थना करते हुए पशु सम्पदा की इच्छा व्यक्त की गयी है गाय के अतिरिक्त बकरियां घोड़े इत्यादि भी पाले जाते थे पशु चारण सामूहिक रूप से किया जाता था। ऋग्वेद के कुल मंत्रों में ऐसे अनेक बार उल्लेख मिलते हैं

(ix) ऋग्वेद में गायों की चर्चा 176 बार की गयी है। गाय की महत्ता इससे भी

परिलक्षित होती है कि ऋग्वेद के एक स्थान पर बताया गया है कि देवताओं की उत्पत्ती भी गाय से हुई है।
(x) ऋग्वेद के कुछ स्थानो पर कहा गया है कि कि गाय का वध नही करना चाहिए और उसे अघ्न्या / अवध्या (जिसे मारा नही जाना चाहिए) कहा गया है। लेकिन इसका केवल उसके आर्थिक महत्व का बोध देता है। ऋग्वैदिक काल के गाय को पवित्र नही माना जाता था क्योकि गाय और बैल दोनो को पवित्र नही माना जाता था क्योकि गाय और बैल दोनो लोग बध आहार के लिए किया जाता था। गोमांस अतिथी को परोसा जाने वाला स्वादिष्ट आहार था और यही कारण था कि अतिथि को "गोघ्न" कहा गया है।

नोट :① भैंस को "गौवाल" गायोभी वाला वाली कहा जाता था
(ii) मृग शब्द जंगली जानवरो को पशु कहा जाता था जिसके अन्तर्गत मुख्यतः गाय बैल आदि थे यद्यपि ये शब्द घोडे और कभी कभी भेड़ो का सूचक था
(iii) रयी (सम्पति) का निर्धारण पशुओं के द्वारा होता था
(iv) देवताओ को चार विभाग मे विभाजित किया गया था "दिव्य पार्थिव" "गोजात" और आप शब्द (जल से सम्बन्धित)

6. ① - ऋग्वैदिक आर्यों का कृषि एक गौण पेशा था फिर भी उन्हे खेती की जानकारी थी ऋग्वेद के कुल 10462 श्लोको मे से सिर्फ 24 श्लोको मे ही कृषि की चर्चा है उनमे से अधिकांश श्लोक प्रक्षेपक माने जाते है संहिता के मूल भाग मे कृषि के महत्व के केवल तीन ही शब्द प्राप्त होते है। और वह है → लांगल, कुर्दर, एव वपन्ति (अर्थात खेती करना) को
नोट ① आर्य शब्द "अर" धातु से निकला हुआ है तथा अर का अर्थ कृषि करना है।

लेकिन ऋग्वेद कालिन लोगो का मुख्य पेशा पशु पालना था।
(ii) ऋग्वैदिक आर्य लोग हल के जरिये जुताई करते थे हलों में बैल जुते रहते थे लेकिन हल के फाल के लिए धातु का प्रयोग नही होता था

नोट :— (i) कृषि शब्द का अर्थ खेती करना होता है लेकिन ऋग्वेद कुल खण्डो में इसका प्रयोग अत्यंत दुर्लभ है।
(ii) कृषि शब्द का उल्लेख ऋग्वेद में 33 बार हुआ है। लेकिन "लोगो" के अर्थ में जैसे पंच कृष्टय :
(iii) ऋग्वैदिक काल में एक ही फसल "यव" के बारे में जानकारी मिलती है। विद्वानों का कहना है कि ऋग्वेद काल के लोग सभी फसलो के लिए "यव" शब्द का प्रयोग करते थे।
(यव = जौ)

नोट (i) ऋग्वैदिक काल के चावल के अवशेष नही मिलते है।
(ii) ऋग्वैदिक काल में भारत में लोहा का अविष्कार नही हो पाया था।

(iv) ऋग्वैदिक काल में भारत आग का प्रयोग ऋग्वैदिक आर्य लोग जंगलो को जलाने के लिए किया करते थे और परिवर्ती खेती (झूमखेती Shifting culture) का प्रयोग आरम्भ हो चुका था इस क्षेत्र में वर्षा कम होती थी तथा ऋग्वेद में वर्णित नदिया सतलज सिन्धु रावी आदी के बहाव में जल्दी जल्दी परिवर्तन होता रहता था। उच्च स्तर के सिचाई प्रणाली के बिना खेती का विकास नही हो पाया था और और नदियों के किनारे की कछारी (जलोढ़) भूमी की सिचाई स्थायी तौर पर नही की जाती थी इस प्रकार ऋचाओं में वर्णित हथिया कुदाल और कुल्हाड़ी को सायद जंगलो को काटकर साफ करके या परिवर्तित खेती

के लिए प्रयोग किया जाता था।

(v) उत्तरवैदिक काल की अर्थव्यवस्था के कम से कम प्रारम्भिक चरणों में कृषि का गौण स्थान ही था इस बात कि पुष्टी ऋग्वेद देव कुल में देवीयों के स्थान से भी हो जाती है। क्योंकि इनसे देवताओं की तुलना में उन्हें नगण्य ही माना गया है। अगर प्रारम्भिक आर्यों की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित होती है तो देवियों का स्थान देवताओं के समकक्ष होता।

7 पशुचारण एवं परिवर्तित खेती के साक्ष्यों से स्पष्ट है कि लोग खानाबदोश या अर्ध-खानाबदोश की स्थिति में पशु झुण्ड को लेकर निश्चित समय के लिए पशुओं को चराने के लिए घूमते थे साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्यों से स्पष्ट है कि लोग कृषि पर आधारित थे स्थायी जीवन नहीं बिता रहे थे आबादी की गतिशील चरित्र के बारे में विश जैसे शब्द से समझा जा सकता है कि जिसका तात्पर्य बस्ती या कबिला से था "पुनर" (विश) उप (विश) और प्र (विश) जैसे प्रत्ययों के लगातार प्रयोग से बस्तियों के उप विभाजन का बोध होता है जिनका तात्पर्य है पास बसना (एक बस्ती को) पुनः प्रवेश करना (एक बस्ती में) या वापस आना (एक बस्ती को)